श्री हनुमान चालीसा (सम्पुटित)

संपुट : नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।

।। दोहा ।।

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि ।
बरनउँ रघुबर बिमल जसु, जो वायकु फल चारि ।।1।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौं पवन-कुमार ।
बल बुधि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार ।।2।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।

।। चौपाई ।।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
जय हनुमान ज्ञान गुन सागर। जय कपीस तिहुँ लोक उजागर ।।3।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
राम दूत अतुलित बल धामा। अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ।।4।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
महाबीर बिक्रम बजरंगी। कुमति निवार सुमति के संगी ।।5।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
कंचन बरन बिराज सुबेसा। कानन कुंडल कुंचित केसा ।।6।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै। काँधे मूँज जनेऊ साजै ।।7।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
शंकर सुवन केसरीनंदन। तेज प्रताप महा जग बंदन ।।8।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
बिद्यावान गुनी अति चातुर। राम काज करिबे को आतुर ।।9।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया। राम लखन सीता मन बसिया ।।10।।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा। बिकट रूप धरि लंक जरावा।।11।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
भीम रूप धरि असुर सँहारे। रामचंद्र के काज सँवारे ।।12।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
लाय सजीवन लखन जियाये। श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ।।13।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई। तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ।।14।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ।।15।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा। नारद सारद सहित अहीसा ।।16।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते। कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ।।17।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा। राम मिलाय राज पद दीन्हा ।।18।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना। लंकेस्वर भए सब जग जाना ।।19।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू ।।20।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं ।।21।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।

दुर्गम काज जगत के जेते। सुगम अनुग्रह तम्हरे तेते ।।22।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे ।।23।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तुम रच्छक काहू को डर ना ।।24।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै ।।25।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाम सुनावै ।।26।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।27।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ।।28।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा ।।29।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
और मनोरथ जो कोइ लावै। सोई अमित जीवन फल पावै ।।30।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा ।।31।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे ।।32।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता ।।33।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।

नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा ।।34।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै ।।35।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई ।।36।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
और देवता चित्त न धरई। हनुमत सेइ सर्ब सुख करई ।।37।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ।।38।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
जै जै जै हनुमान गोसाईं। कृपा करहु गुरुदेव की नाईं ।।39।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महा सुख होई ।।40।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
जो यह पढ़ै हनुमान चलीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा ।।41।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै नाथ हृदय मँह डेरा ।।42।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।

।। दोहा ।।

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप ।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप ।।43।।
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा ।।

❑❑❑